उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक मानसिक स्वास्थ्य में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

शोध कर्ता

भूपेश कुमार प्रधान

ए.एड (छात्र)

प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोध निर्देशिका

श्रीमती उपासना श्रीवास्तव

सहा. प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय)

प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश –

प्रस्तुत शोध ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव'' पर आधारित है। इस अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य किस प्रकार प्रभावित करता है। इसके लिये शोधार्थी ने अपने अध्ययन उद्देश्य 1.उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

2.उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना। 3.उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़न वाले प्रभाव का अध्ययन करना। निर्धारित किया तथा उसके आधार पर परिकल्पना 1.उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। 2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। 3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में महासमुन्द जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 120 विद्यार्थियों जिसमें 60 छात्र तथा 60 छात्राओं का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण हेतु डॉ. करूणा

शंकर मिश्रा जी द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण मापनी एवं प्रो. अरूण कुमार सिंह व अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग किया गया है। चयनित विद्यार्थियों पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन करने उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिये टी–मूल्य ज्ञात किया गया। जिसके परिणाम दर्शाते है कि परिकल्पना क्रमांक 1 मेंउच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया जिससे हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।परिकल्पना क्रमांक 2 में उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक के छात्रों के विद्यालयीन वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया जिससे हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है। परिकल्पना क्रमांक 3उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक के छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया जिससे हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

किवर्ड : मानसिक स्वास्थ्य, विद्यालय वातावरण, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी

भुमिका –

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने का केंद्र नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, तथा मानसिक विकास का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। विशेष रुप से उच्चतर माध्यमिक स्तर यह अवस्था है, जिसमें विद्यार्थी किशोरावस्था से युवावस्था की ओर अग्रसर होते हैं। इस अवधि में उनके व्यक्तित्व, व्यवहार, विचारधारा तथा मानसिक स्वास्थ्य में तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस स्तर पर शिक्षक का व्यवहार, सहपाठियों का सहयोग, विद्यालय की अनुशासन व्यवस्था तथा उपलब्ध सुविधाएँ विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सकारात्मक या नकारात्मक रुप से प्रभावित करती हैं। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यालयों में ऐसा वातावरण निर्मित किया जाए, जो विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने में सहायक हो।

विद्यालयीन वातावरण –

विद्यालयीन वातावरण से अभिप्राय विद्यालय की भौतिक सुविधाओं, शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों, सहपाठियों के व्यवहार, अनुशासन, शिक्षण–पद्धति, सहशैक्षिक गतिविधियों तथा विद्यालय के समग्र सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेश से है। यदि विद्यालय का वातावरण सकारात्मक, सहयोगात्मक प्रेणादायक हो, तो विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, संतोष, सामाजिक समायोजन तथा मानसिक संतुलन का विकास होता है। इसके विपरीत तनावपूर्ण, दमनकारी अथवा असुरक्षित वातावरण विद्यार्थियों में चिंता, अवसाद, भय, असंतोष तथा मानसिक अस्थिरता उत्पन्न कर सकता है।

विद्यालयीन वातावरण का आयाम

- मित्रता
- बाधा
- सक्रियता
- सम्मान
- सम्मान की भावना का अभाव
- शैक्षिक

मानसिक स्वास्थ्य –

मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति की वह अवस्था है, जिसमें वह अपनी क्षमताओं को पहचानता है, जीवन के सामान्य तनावों का सामना कर सकता है तथा समाज में प्रभावी रुप से कार्य करने में सक्षम होता है। विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उनके शैक्षिक प्रदर्शन, व्यवहार, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक संबंधों को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करता है। वर्तमान समय में प्रतियोगिता, परीक्षा तनाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा सामाजिक दबाव के कारण विद्यार्थियों में मानसिक समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसी स्थिति में विद्यालयीन वातावरण की भुमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। मानसिक स्वास्थ्य का अभाव बच्चों के भविष्य तथा भावी जीवन को अत्यधिक प्रभावित करता है।

व्यक्ति को शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है तभी वह परिवार समाज और अपने आसपास के वातावरण में समायोजित हो सकता है। हम इन सभी व्यक्तियों को मानसिक रूप से स्वस्थ मान सकते हैं –

1. संघर्ष एवं चिंता से मुक्त व्यक्ति
2. पूर्ण रूप से समायोजित
3. आत्मविश्वास
4. आत्म नियंत्रण
5. सार्थक जीवन उच्च नैतिकता एवं संघात्मक रूप से स्थिर पूर्ण व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ समझा जाता है

अध्ययन का महत्व –

विद्यालयीन वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सहानुभूति, प्रेम, सद्भावना और सहयोग से ओतप्रोत होता है। विद्यार्थियों में जाति–भेद, ऊंच–नीच की भावना नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक बालक विद्यालयों में अपने आप को सुरक्षित अनुभव करते हैं। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के समूह भावना का विकास करें जिससे विद्यार्थियों में अपने शैक्षिक परिणामों एवं अपने भविष्य के प्रति विद्यार्थियों में चिंता होती रहती है। आज के समय के अनुसार समाज में अपने गुणों तथा योग्यताओं के अनुरूप विषयों का चयन करने के लिए अनेक अवसर प्रदान किए जाते हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों में निर्णय लेने की गतिशील प्रक्रिया को शिक्षक एवं अभिभावक को समझना होगा। जिसे विद्यार्थी अपने विवेकपूर्ण ढंग से अपने विषय के बारे में सही एवं उपयुक्त तरीके से अध्ययन करते हुए उपयुक्त शैक्षिक परिणामों को प्राप्त करें। इस स्तर पर प्राप्त शैक्षिक स्तर पर उसके शैक्षिक परिणामों में प्रभाव डालेगा। जिससे विद्यार्थी का दुश्चिंता से व्यक्तित्व का समुचित विकास संभव नहीं है, इसके लिए मानसिक रूप से स्वस्थ बालक सामाजिक परिवारिक संवेगात्मक तथा व्यवसायिक

जीवन में समायोजन करने में सफल होता है। यदि कोई बालक मानसिक द्वंद–चिंता और मनोग्रंथियों से पीड़ित हो तो उसके लिए समायोजन करना संभव नहीं समायोजन का अभाव उसके व्यक्तित्व को विघटित कर सकता है अतः व्यक्तित्व का संगठन मानसिक स्वास्थ्य के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य एवं विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन से प्राप्त परिणाम से विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि तथा विद्यालयीन वातावरण का निर्माण करने में मार्गदर्शन प्रदान करेगा और आगे जो शोध होगा उसको भी दिशा प्रदान करेगा। प्रस्तुत अध्ययन इस क्षेत्र के अभिभावको विद्यार्थियों एवं शैक्षिक नीति निर्देशकों के मार्गदर्शन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सहायक होगा।

पूर्व में किए गए शोध कार्य –

- **कुमार (2011)** प्रस्तुत शोध अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में विद्यालयीन वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि इसमें शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में सार्थक अंतर होता है। लेकिन शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। तो उसमें निष्कर्ष में हम यह देख सकते हैं कि शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- **सिन्हा एवं यादव (2012)** प्रस्तुत शोध अध्ययन में रेवाड़ी जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए रेवाड़ी के 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में दिया गया था। इस अध्ययन के उपकरण के रूप में ए. के. सिंह एवं कल्पना सेन गुप्ता द्वारा मानकीकृत मानसिक स्वास्थ्य बैटरी का प्रयोग किया गया। इसके प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मानक विचलन, टी परीक्षण तथा सार्थकता के स्तर का उपयोग

किया गया। अध्ययन के परिणाम प्राप्त हुए की प्राइवेट एवं सरकारी स्कूल के छात्र– छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

- **दुआ एवं शर्मा (2012)** इस शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के गृह वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इसमें न्यादर्श के रूप में बहुस्तरीय यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया। प्रथम स्तर पर रोटी खंड जिले से 8 क्षेत्रों से केवल क्षेत्र जिसमें बरेली, बदाउ एवं पीलीभीत को लिया गया। और फिर द्वितीय स्तर पर इसी क्षेत्र में से 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को यादृच्छिक विधि का चयन किया गया। तृतीय स्तर पर इन विद्यालयों से कक्षा दसवीं के 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इसमें पूरी जानकारी देने वाले 594 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयनित कर लिया गया। इसमें उपकरण के रूप में के. एस. मिश्रा के द्वारा मानकीकृत निर्मित गृह वातावरण इन्वेंटरी तथा मानसिक स्वास्थ्य मापनी के लिए अरुण कुमार तथा अल्पना सिंह गुप्ता द्वारा निर्मित का उपयोग किया गया। इसमें परिणाम यह बताते हैं कि उच्च नियंत्रण, पोषण, पुरस्कार एवं निम्न दंड, अस्वीकृत एवं वंचितता का आदि अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के कारक हैं।
- **चौधरी (2013)** प्रस्तुत शोध में स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उनके परिवारिक वातावरण के मध्य संबंध पर अध्ययन किया। इसमें न्यादर्श के रूप में उच्चतर माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों में से 100 विद्याथियों का चयन किया जिसमें 50 छात्र 50 छात्राएं थी। चयनित विद्याथियों के मानसिक स्वास्थ्य मापने के लिए एस. के. वर्मा 1978 द्वारा निर्मित पी.जी.आई. मानसिक स्वास्थ्य एवं संजय व्होरा 1997 द्वारा पारिवारिक वातावरण मापनी को प्रषासित किया गया। परिणाम में देखा गया कि विद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों के परिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक संबंध पाया गया। किशोर छात्र एवं छात्राओं

की मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया। उसी प्रकार किशोर छात्र एवं छात्राओं के परिवारिक वातावरण के मध्य भी सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

समस्या का कथन –

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

प्रकार्यात्मक परिभाषा –

मानसिक स्वास्थ्य की परिभाषा –'' मानसिक रूप से स्वस्थ न रहने पर बालक का विकास सही तरीके से नहीं हो पाता है मानसिक रूप से अस्वस्थता के कारण बालक समाज पर बोझ बने दिखाई देते हैं। इसीलिए व्यक्तियों के जीवन में मानसिक स्वास्थ्य का महत्व शारीरिक स्वास्थ्य कहीं कम नहीं है। ''

विद्यालयीन वातावरण की परिभाषा –'' विद्यालयीन वातावरण में सब बाह्य तत्व आ जाते हैं, जिन्होंने व्यक्ति को जीवन आरंभ करने के समय से प्रभावित किया है। ''

अध्ययन का उद्देश्य –

इस प्रकार छात्र छात्राओं की विभिन्न समस्या एवं अयोग्यता को ध्यान में रखते हुए उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का एक अध्ययन किया गया है। अतः शोधकर्ता ने निम्नलिखित उद्देश्यों के कारण शोधकार्य किया है

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़न वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना –

$\mathbf{H_{01}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

$\mathbf{H_{02}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

$\mathbf{H_{03}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमा –

1. प्रस्तुत शोध कार्य में महासमुन्द जिले तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में 120 विद्यार्थियों तक सीमित है।
3. प्रस्तुत लधुशोध में महासमुन्द जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वी. के विद्यार्थियों का चयन किया गया।
4. इस अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 60 छात्र एवं 60 छात्राओं तक सीमित है।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' करना है। अतः प्रस्तुत लघु शोध के आधार पर प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि प्रयोग गया है।

जनसंख्या –

शोध समस्या के चरों का जिस समूह से संबंध होता है उसे समग्र या जनसंख्या कहते हैं। जनसंख्या या समष्टि एक सांख्यिकी संकल्पना है जिसका अर्थ होता है बहुत सी इकाइयों की वृहद समूह जिसमें से कुछ इकाइयों को अध्ययन के लिए चुना जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रुप में महासमुन्द जिले के कक्षा 11 वीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें शासकीय विद्यालय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थी हैं । जिसमें 60 छात्र और 60 छात्रा है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्ता ने महासमुन्द जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों को यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। जिसमें 120 विद्यार्थियों (60 छात्र एवं 60 छात्रा) को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

सारणी क्रमांक – 1

न्यादर्श सारणी

क्र.	शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राओं	कुल
1	शास. उच्च. माध्य. विद्यालय भोथलडीह	15	15	30
2	शास. उच्च. माध्य. विद्यालय कुसमीसरार	15	15	30
3	शास. उच्च. माध्य. विद्यालय भुथिया	15	15	30
4	ग्रामीण उच्च. माध्य. विद्यालय तोषगांव	15	15	30
	कुल विद्यार्थियों की संख्या	60	60	120

चर –

1. **स्वतंत्र चर –विद्यार्थी**
2. **आश्रित चर –विद्यालयीन वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य**

उपकरण –

सारणी क्रमांक – 1

क्र.	उपकरण का नाम	चर	निर्माणकर्ता का नाम
1	विद्यालय वातावरण मापनी	विद्यालयीन वातावरण	डॉ. करूणा शंकर मिश्रा
2	मानसिक स्वास्थ्य मापनी	मानसिक स्वास्थ्य	प्रो. अरूण कुमार सिंग,डॉ. अल्पना सेन गुप्ता

सांख्यिकी विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत कार्यो के अनुरूप अंकन किया गया है तथा कुल प्राप्ताकों के आधार पर मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' का मान ज्ञान किया गया है।

परिकल्पनाओं की पुष्टि–

परिकल्पना H_{01}

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए प्राप्त आंकडों को उच्च मानसिक स्वास्थ्य तथा निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले विद्यार्थियों में बांटा गया है।

सारणी क्रमांक –1

उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की तालिका

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन	t–मूल्य
उच्च मानसिक स्वास्थ्य	42	89.5	13.5	20.65
निम्न मानसिक स्वास्थ्य	38	29.7	12.4	
$df=N_1+N_2-2=78(1.96)<t$ सार्थक अन्तर पाया गया।				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर उच्च मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर मा**ध्यमिक** के विद्यार्थियों की संख्या 42 मध्यमान 89.5 तथा प्रमाणिक विचलन 13.5 है निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक वाले विद्यार्थियों की संख्या 38 मध्यमान 29.7 तथा प्रमाणिक विचलन 12.4 है तथा स्वतंत्रता की कोठी **df=**78 है दोनों स्तरों की तुलना करने के लिए टी–मान की गणना की गई टी का मान 20.65 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए सारणी का अवलोकन किया गया जो स्वतंत्रता को अंश 0.05 स्तर के सारणी मान से मान अधिक है।

$t(78)=20.65, p<0.05$ होने के कारण स्पष्ट हैं कि उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर मा**ध्यमिक** के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना H_{02} उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए प्राप्त आंकडों को उच्च मानसिक स्वास्थ्य तथा निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले छात्रों में बांटा गया है।

सारणी क्रमांक – 2

उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक छात्रों की तालिका

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन	t–मूल्य
उच्च मानसिक स्वास्थ्य	24	85	28.8	5.15
निम्न मानसिक स्वास्थ्य	18	35.5	33.4	
$df=N_1+N_2-2=40(1.96)<t$ सार्थक अन्तर पाया गया।				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर उच्च मानसिक स्वास्थ्य वाले कक्षा उच्चतर माध्यमिक के छात्रों की संख्या 24 माध्यमान 85 तथा प्रमाणिक विचलन 28.8 है निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले छात्रों की संख्या 18 मध्यमान 35.5 तथा प्रमाणिक विचलन 33.4 है तथा स्वतंत्रता की कोटी **df=**40 है। दोनों स्तरों की तुलना करने के लिए **t** मान की गणना की गई।**t** का मान 5.15 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए सारणी का अवलोकन किया गया जो स्वतंत्रता को अंश 0. 05 स्तर के सारणी मान से अधिक है।

$t(40)=5.15, p<0.05$ होने के कारण स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक के छात्रों की विद्यालयीन वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना H_{03} उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए प्राप्त आंकडों को उच्च मानसिक स्वास्थ्य तथा निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले छात्राओं में बांटा गया है

सारणी क्रमांक – 3

उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक छात्राओं की तालिका

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन	t–मूल्य
उच्च मानसिक स्वास्थ्य	18	89.4	16.4	6.59
निम्न मानसिक स्वास्थ्य	20	34.5	31.7	

$df=N_1+N_2-2=36(1.96)<t$ सार्थक अन्तर पाया गया।

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर उच्च मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक के छात्राओं की संख्या 18 मध्यमान 89.4 तथा प्रमाणिक विचलन 16.4 है एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक के छात्राओं की संख्या 20 माध्यम 34.5 तथा प्रमाणिक विचलन 31.7 है। तथा स्वतंत्रता की कोटी df=36 है जो स्तरों की तुलना करने के लिए **t** मान की गणना की गई **t** का मान 6.59 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए सारणी का अवलोकन किया गया। जो स्वतंत्रता के अंश 0.05 स्तर के सारणी मान से अधिक है।

$t(36)=6.59,p<0.05$ होने के कारण स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले उच्चतर माध्यमिक के छात्राओं की विद्यालयीन वातावरण की सार्थक अंतर पाया गया।

अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है

निष्कर्ष –

परिकल्पना H_{01}

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपरोक्त परिकल्पना का अवलोकन करने के पश्चात $df=N_1+N_2-2=78(1.96)<t$ सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना H_{02}

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपरोक्त परिकल्पना का अवलोकन करने के पश्चात $df=N_1+N_2-2=40(1.96)<t$ सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना H_{03}

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपरोक्त परिकल्पना का अवलोकन करने के पश्चात $df=N_1+N_2-2=36(1.96)<t$ सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सुझाव –

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन विश्लेषण और व्याख्या से जो निष्कर्ष प्राप्त हुये उन्ही के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं जो विद्यार्थियों की प्रगति में सहायक सिद्ध होंगे–

1. विद्यालय के प्राचार्य को छात्रों मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान रखकर कार्य करना चाहिए।

2. शिक्षण के लिए शिक्षकों को नया तकनीकों का उपयोग करके शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाया जा सके।

3. विद्यालयों के विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करें।

4. अभिभावक को बच्चों की रुचि व योग्यतानुसार उन्हें विषय व व्यवसाय चयन करने में स्वतंत्र प्रदान करें।

5. स्कूलों में पढ़ाई के साथ–साथ अन्य क्रियाकलाप का आयोजन अधिक से अधिक करना चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन –

1. तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन।

2. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य विषय की स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन।

3. किशोरी छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन।

4. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन।

5. उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम एवं हिंदी माध्यम विद्यार्थियों की विद्यालयीन वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन

संदर्भ ग्रंथ सूची

- चौहान रीता, पाठक पी. डी. – अधिगमकर्ता एवं अधिगम प्रक्रिया, *पेज नं. 76–79*
- राव, एन. पापा. – अधिगमकर्ता एवं अधिगम प्रक्रिया, *पेज नं. 102–103*
- शिक्षण – मरिअम वेबस्टर ऑनलाइन शब्दकोश –*वेबैक मशीन, पेज नं. 45–47*
- यादव, सियाराम – अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, *शारदा पुस्तक सदन, इलाहाबाद, – पेज नं. 442–447*
- सिन्हा पवन (2015, अक्टूबर) – भारतीय आधुनिक षिक्षा, *मोतिलाल नेहरू कॉलेज साउथ केम्पस दिल्ली विष्वविद्यालय,*
- श्रीवास्तव मुकेष, शर्मा पुष्पलता – षिक्षा के दार्षनिक दृष्टिकोण
- गुप्ता गौरव – असाध्य नहीं मनोरोग हिन्दुस्तान लाइव, *अक्टूबर 2009.*
- नन्द के. बला – स्कूली बच्चों में भय, तनाव एवं दुष्चिता के प्रभाव अक्टूबर 2015, *भारतीय आधुनिक षिक्षा पेज नं. 11*
- श्री वास्तव, बी. एवं शर्मा,एन – मेंटल हेल्थ एंड पैरेन्ट चाइल्ड रिलेशनषिप ऑफ क्लास हेल्थ स्टूडेन्टस ऑफ सी. बी. एस. इ. बोर्ड इडियन साइकोलॉजी रिव्यू *73, स्पेषियल, 25 ।*
- झा. ए. पी. (2005) ए स्टडी ऑफ मेंटल हेल्थ ऑफ सेकण्डरी स्कूल चिल्ड्रन इडियन साइकोलॉजी परेव्यू 64 (3) 119–122
- श्री वास्तव, बी. एवं शर्मा,एन – मेंटल हेल्थ एंड पैरेन्ट चाइल्ड रिलेशनषिप ऑफ क्लास हेल्थ स्टूडेन्टस ऑफ सी. बी. एस. इ. बोर्ड इडियन साइकोलॉजी रिव्यू 73, स्पेषियल, 25 ।
- झा. ए. पी. (2005) ए स्टडी ऑफ मेंटल हेल्थ ऑफ सेकण्डरी स्कूल चिल्ड्रन इडियन साइकोलॉजी परेव्यू 64 (3) 119–122
- मेहन, एम. कुलश्रेष्ठ, यू. एवं तिवारी, एम (2006) मेंटल हेल्थ एंड एडजेस्टमेंट लवल ऑफ हॉस्टलर एव ंके स्कॉलर्स जर्नल ऑफ साइकोलॉजीकल रिसर्च 2, 69–70
- शंकर, एम, प्रभु एवं मैथली, एन(2007) मेंटल हेल्थ ऑफ सुनामी अफक्टेट एडोलसेंट ऑरफन चिल्ड्रन, इंडियन साइकोलॉजी रिव्यु 64 (4), 189–194

- शर्मा एवं श्रुति माला (2008) इफेक्ट ऑफ म्यूसिक एजुकेषन आन मेंटल हेल्थ ऑफ फिक्थ ग्रेड चिल्ड्रन रिसेंट रिसचेंज इन एजुकेषन एंड साइकोलॉजी कन्टेल 9, 1–21
- इग्नू (2010). शालेय संगठनात्मक परिवेश. विद्यालय प्रबंधन, इ.एस. 335,ब्लॉक3, 47–56.
- कपिल, एच.के. (1991). असामान्य मनोविज्ञान, आगरा, हर प्रसाद भार्गव, 4/230,कचहरी घाट, 328–338.
- झा (2005). शैक्षिक स्तर के आधार पर किशोरावस्था के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्नता में अंतर का अध्ययन. शोध प्रकल्प, 38(1), 40 – 41.
- निगम, ए. एवं देवी, बी. (2007). कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी अधिगम शैली, चिंतन तथा शालेय वातावरण के मध्य संबंध पर अध्ययन.
- रिसेंट रिसर्चस इन एजूकेशन एंड साइकोलॉजी, 12(III&IV), 101–106.
- नौटियाल, जे.पी. (2008). बाल विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, पंचम संस्करण
- माथुर,के. पी. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान. आर.एस.ए.इंटरनेशनल, प्रथम संस्करण.
- सिंह, आर. (2009). अधिगम का मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, षष्ठ संशोधित संस्करण.
- https:@@www-hindivyakran com@2018@10@chatravas&ka&jeevan&essay&in&hindi-htmal\m¾1.
- H-S- Sunivan ¼1947½: Conception of modern psychiatry Washington]willian Alanson white psychiatric foundation]27|
- www.scotbuzz.org
- https://him.wikipedia.org
- श्रीवास्तव, वी. एवं शर्मा, एन.(2010). मेंटल हेल्थ रू एंड चाइल्ड रिलेशनशिप ऑफ क्लास टेन्थ स्टूडेन्ट ऑफ सी.बी.एस.ई. बोर्ड.इंडियन साइकोलॉजी रिव्यू, 73, स्पेशियल इश्यू, 25.
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005). एन.सी.ई.आर.टी. 88–89.
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (1975). एन.सी.ई.आर.टी. 55–56.